बचपन में गांधीजी को प्यार से सभी मोहन के स्थान पर मोनिया कहते थे। पेड़ पर चढ़ना उसका शौक था। घर के लोगों का पेड़ से मोनिया के गिरने का डर लगता, किंतु वह निर्भीक था। एक दिन वह अमरूद के पेड़ पर चढ़ गया। वह नीचे उतरता, इसके पहले ही उसके बड़े भाई वहां आ गए।

उन्होंने उसे पेड़ पर चढ़े देखा, तो नाराज होकर उसे दो-चार थप्पड़ रसीद कर दिए। मोनिया रोते हुए मां के पास पहुंचा और बोला-'मां! भाई ने मुझे मारा।' मां ने सहज भाव से कह दिया-'जा, तू भी उसे मार आ।' मां के ऐसा कहते ही वह गंभीर होकर बोला- 'ऐसा तुम कहती हो, मां! मैं अपने बड़े भाई पर हाथ उठाऊं!' मां की बात काटते हुए

बोला - 'तुम गलत हो मां, जो बड़े को मारने की सीख देती हो। भाई मुझसे बड़े हैं।
वे भले मुझे मार लें, किंतु मैं उन्हें नहीं मारूंगा।'
मां यह सुनकर चकित रह ~~गया~~ गई। ~~उन्ह~~
उन्होंने तो बड़े भाई को मारने की बात ~~स~~ साधारण रूप में कह दी थी। सोनिया ने फिर कहा - 'मां। जो मारता है, उसे तुम क्यों नहीं रोकतीं। तुम्हें उससे कहना चाहिए कि वह नहीं ~~मारे~~ मारे, न कि मार खाने वाले से कहना चाहिए कि वह बड़े भाई मारे।' अपने पुत्र के पवित्र ~~हृद~~ हृदय पर मां का सीना गर्व से फूल उठा। वे सोनिया को गले लगाकर बोलीं - बेटा!
तूने इतनी अच्छी बातें कहां से सीखीं। मालूम नहीं ~~की~~ कि ईश्वर ने तेरे लिए क्या भाग्य रचा है!' आगे चलकर इसी सोनिया ने

Scanned with CamScanner

महात्मा गांधी की के रूप में न केवल अपने देश, बल्कि विदेशों से भी ~~अगाध~~ अगाध श्रद्धा पाई और ~~आज~~ आज वे, विश्व के महान आदर्श माने जाते हैं। सार यह है कि बड़ों को का सम्मान छोटों का कर्तव्य है, किंतु इसकी शिक्षा बड़ों को अपने आचरण के द्वारा छोटों को देनी चाहिए।

Scanned with CamScanner